अगर डी ए पी की कमी हो तो गेहूं में अन्य खाद डालने की पी ए यू की सलाह

पंजाब कृषि विश्विद्यालय (पी ए यू), लुधियाना के भूमि वैज्ञानिकों नें गेहूं में डी ए पी की जगह और फ़ॉस्फ़ोरस तत्वों वाली खादों के वैकल्पिक उपयोग की सलाह दी है।

पी ए यू, लुधियाना के भूमि विज्ञान विभाग के प्रमुख धनविंद्र सिंह ने कहा की डी ए पी सबसे ज़्यादा फ़ॉस्फ़ोरस तत्व वाली खाद है जो धान-गेहूं फ़सल चक्कर में उपयोग की जाती है।

प्रोफेसर धनविंद्र ने बताया कि उच्च फ़ॉस्फ़ोरस मात्रा के कारण, किसान गेहूं की फ़सल में डी ए पी को अधिक डालना पसंद करते हैं। लेकिन अब डी ए पी के अलावा कई खादें हैं जिन्हें फ़ॉस्फ़ोरस के वैकल्पिक स्रोत के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि डी ए पी में 46 प्रतिशत फ़ॉस्फ़ोरस और 18 प्रतिशत नाईट्रोजन होती है। एक और खाद एन पी के (12:32:16) में 32 प्रतिशत फ़ॉस्फ़ोरस, 12 प्रतिशत नाईट्रोजन और 16 प्रतिशत पोटाशियम होता है।

अगर डी ए पी ना मिले तो, कृषि वैज्ञानिकों ने कहा कि गेहूं में इसकी जगह डेढ बोरी एन पी के (12:32:16) डाली जा सकती है। उन्होंने कहा कि एन पी के (12:32:16) डी ए पी की सबसे अच्छा विकल्प हो सकती है।

डी ए पी का एक और विकल्प सिंगल सुपर फ़ॉस्फ़ेट है जिसमें 16 प्रतिशत फ़ॉस्फ़ोरस होता है। सिंगल सुपर फ़ॉस्फ़ेट की तीन बोरियां डालने से गेहूं में फ़ॉस्फ़ोरस की कमी पूरी हो सकती है और फ़सल को 18 किलोग्राम सल्फर (गंधक) भी मिल जाता है।

विशेषज्ञों ने कहा कि ट्रिपल सुपर फ़ॉस्फ़ेट को नई खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है जिसमें 46 प्रतिशत फ़ॉस्फ़ोरस होता है। ट्रिपल सुपर फ़ॉस्फ़ेट खाद अभी बाज़ार में आयी है जिसका उपयोग किसान गेहूं के लिए कर सकते हैं।

अन्य विकल्पों में डी ए पी की जगह गेहूं में 1.8 बोरी एन पी के (10:26:26) डाली जा सकती है। पी ए यू के विशषज्ञों ने कहा कि सिंगल सुपर फ़ॉस्फ़ेट या ट्रिपल सुपर फ़ॉस्फ़ेट के उपयोग पर बुवाई के समय प्रति एकड़ 20 किलो यूरिया डालना चाहिए।